International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 4 | July - August 2025 ISSN: 3048-9490

कामकाजी महिलाओं के कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता का समाजशास्त्री अध्ययन

डॉ. भूमिका मिश्रा
सहायक अध्यापक
समाजशास्त्र विभाग समाजिक विज्ञान अध्ययनशाला, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग , छ.ग.

संक्षेपिका

प्रस्तुत अध्ययन में कामकाजी महिलाओं के कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता का अध्ययन किया गया है, जो छत्तीसगढ़ के रायपुर नगर से सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालायों से है। अध्ययन में दैव निर्दशन के माध्यम से चयनित 300 महिलाओं को लिया गया है। अध्ययन में तथ्यों का संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन के मध्यम से अपकरण लिया गया है। शोध अध्ययन से प्राप्त तथ्य यह दर्शाता है कि आज की महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। आज की महिलाएं अब घर की चार दीवारी से निकलकर कामकाज की दुनिया में भी शामिल होती जा रही है। बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों में महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर मिलने लगे है, लेकिन जैसे-जैसे महिलाएं घर से निकल कर बाहर काम तक पहुंच रहीं है, वैसे-वैसे उनकी परेशानियां भी बढ़ती जा रही है। परिवार और नौकरी की अलग-अलग मांगों के कारण कामकाजी महिलाएं दोहरे दायित्व को निभाते हुए बहुत सी परेशानियों का सामना कर रहीं है। जिससे उन्हें कार्य संतुष्टि भी नहीं हो पा रही है। महिलाएं एक काम में ध्यान देती है तो दूसरे काम में विफल हो जाती है। जिससे उन्हें मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक समस्याएं घेर लेती है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य कामकाजी महिलाओं के कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से कार्यरत महिलाओं में कार्य क्षेत्र में उनके कार्यो को लेकर संतुष्टि और अपने कार्यो में दक्षता को लिया गया है। जिससे ज्ञात होता है कि कामकाजी महिलाओं में से 60 प्रतिशत महिलाएं ही अपने कार्यो से असंतुष्टि है तथा उनके असंतुष्टि का कारण है कि वे या तो अपने कार्यो में दक्ष नहीं है, जिस जगह में वे काम करती है वहां के लोगों के साथ तालमेल नहीं बैठा पाती है, अपने काम फिर परिवार को संतुलित नहीं कर पा रहीं है, कामों में सुविधाएं न मिलना आदि सब कारणों से महिलाएं असंतुष्टि हो जाती है।

प्रस्तावना

आर्थिक परिस्थितियों और सामाजिक मांगों के कारण दुनिया भर में कामकाजी महिलाओं की भूमिका बदल गई है। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसी परिदृश्य सामने आया है जिसमें कामकाजी महिलाओं पर व्यक्तिगत जीवन में सक्रिय जुड़ाव बनाए रखते हुए अपने पुरूष समकक्षों की तरह मजबूत कार्यो को विकसित करने का जबरदस्त दबाव होता है। काम का बढ़ता दबाव कामकाजी महिलाओं पर भारी पड़ रहा है और उनके पास खुद के लिए कम समय है। उन्न मोबाइल फोन, नोटपैड और इन्टरनेट जैसे आदि तकनीकी आशीर्वाद के साथ व्यक्तिगत मोर्चे पर बढ़ती जिम्मेदारियां, जो व्यक्तिगत जीवन के साथ काम के जीवन को एकीकृत रखती है, इस ज्ञान युग में व्यक्तिगत और पेशेवर मोर्चो पर भी तनाव पैदा करती है। यह महिलाओं के शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण को प्रभावित करता है। इस प्रकार, कामकाजी महिलाओं के लिए जीवन की अच्छी गुणवत्ता के लिए कार्य जीवन संतुलन प्राप्त करना एक आवश्यक बन गया है। कामकाजी महिलाओं को अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने में आने वाली कठिन चुनौतियों के लिए पहले से ही तैयार रहना चाहिए।

कार्य संतुष्टि का तात्पर्य है किसी व्यक्ति के अपने कार्य जीवन और पारिवारिक जीवन में भी प्रभावी होने के प्रयास से है। यह काम और परिवार के बीच बाजीगरी अधिनियम को प्रभावरी ढंग से प्रबंधित करने के बारे में है। कार्य सतुष्टि का विषय यह दर्शाता है कि काम को अन्य चीजो को पूरी तरह से नहीं करना चाहिए जो लोगों के लिए मायने रखती है जैसे परिवार के साथ समय, सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी, स्वैच्छिक कार्य, व्यक्तिगत विकास, अवकाश और साथ ही मनोरंजन। कार्य जीवन में संतुष्टि बहुत जरूरी हो गया है। प्रत्येक भूमिका के लिए समान संख्या में घंटे निर्धारित करने से कार्य संतुष्टि बनी रहती है। हाल के दशकों में पुरूषों और महिलाओं दोनों के लिए काम का दबाव तेज हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति जैसे कारक त्वरित प्रतिक्रिया की मांग करते है, सख्त समय सीमा का अस्तित्व, गुणवत्ता ग्राहक सेवा से जुड़ा महत्व श्रम बल में उन लोगों के समय की मांग करते है, जो अक्सर जबरदस्त तनाव और दबाव का कारण बनते है।

अध्ययन की सामाजिक प्रासंगिकता

अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि कार्यरत महिलाओं में कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से कार्यरत महिलाओं के बाहर कार्य करके महिलाएं संतुष्ट है या नही या अपने कार्यो में दक्ष है कि नहीं का अध्ययन किया गया है। जिस प्रकार महिलाओं के कामकाजी होने से उनकी सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक स्थिति में परिवर्तन आया है वे से ही वे अपने कार्यो से संतुष्ट भी होती है तो कभी नहीं भी हो पाती है। उनके ऊपर दोहरा दबाव रहता है। जिससे घर और नौकरी के वजह से वे कभी-कभी अपने कार्यो से संतुष्ट नहीं हो पाती है। जिससे उनके भीतर आत्म विश्वास व उत्साह में कमी आने लगती है। किन्तु इतना सब होने पर भी महिलाएं अपने परिवार और कामकाज के बीच समायोजन करना पड़ता है। इन नई-नई चुनौतियों व संभावनाओं का प्रभाव कामकाजी महिलाओं के व्यक्तिगत जीवन में किस तरह पड़ता है इस शोध पत्र के माध्यम से करेंगे।

शोध साहित्य का अध्ययन

गोयल सरिता 2018, प्रस्तुत अध्ययन से पता चलता है अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलायें सेवाओं से संबंधित समस्त चयनित निर्धारकों के लिये संतुष्टि निर्देशांक 3-21 अर्थात् 32-1 प्रतिशत है। यह अंतिम संतुष्टि निर्देशांक अशासकीय क्षेत्र में असंतोषजनक है। महिलायें आर्थिकए सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में जागरूक होकर आत्मनिर्भर हो रही है। उच्च शिक्षा क्षेत्र के सेवाओं से वह असंतुष्ट है, इसमें सुधार की आवश्यकता है ताकि महिलायें अपने को सुरक्षित महसूस करते हुए शिक्षा में और अधिक से अधिक अपना योगदान प्रदान कर सकें।

बोरकर हेमलता एवं पाण्डेय श्वेता 2012, प्रस्तुत अध्ययन में व्याख्यात्मकए आनुमानिक सांख्यिकी के पारिणाम एवं तथ्यों के आधार पर स्पष्ट है किए शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिलाओं तथा अशासकीय संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के कार्य संतुष्टि में अंतर पाया जाता है।

कौर जसदीप 2018, प्रस्तुत अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि विभिन्न व्यावसायों में कार्यरत महिलाओं की व्यवसायिक संतुष्टि में आंशिक अंतर है, जो सार्थकता स्तर पर मान्य नहीं है। अतः हमारे द्वारा निर्मित परिकल्पना स्वीकृत होती है जो शिक्षण व अन्य व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है जो परिलक्षित करती है।

सिंह प्रीति एवं कुमारी संतोषी 2020, प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शासकीय एव अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्य कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर है। यही शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला

शिक्षकों के मध्य कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि विद्यालय प्रकार के अतिरिक्त अन्य कारक भी कार्यसंतुष्टि को प्रभावित करते है।

सिन्हा सुधिंता 2017, प्रस्तुत अध्ययन में नौकरीपेशा महिलाएं गैरकामकाजी महिलाओं की तुलना में अपने जीवन से अधिक संतुष्ट हैंए और घर एवं काम के माहौल की गुणवत्ता दोहरे आय वाले परिवारों में कामकाजी महिलाओं के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर रोजगार के प्रभाव को निर्धारित करती है।

शोध प्रविधि

अध्ययन क्षेत्र - वर्तमान में छत्तीसगढ़ में कुल 33 जिले आते है और 5 संभाग हैए जो मध्यप्रदेश से अलग होने के समय 18 जिले थे पर अब वर्तमान में 28 जिले - रायपुर, कवर्धा, कांकेर, कोरबा, कोरिया, जशपुर, जांजगीर-चाम्पा, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, सक्ती, सारंगढ़-बिलाईगढ़, मोहला-मानपुर, दंतेवाड़ा, दुर्ग, धमतरी, बिलासपुर, बस्तर, महासमुन्द, राजनांदगांव, रायगढ़, सरगुजा, बलौदाबाजार, बालोद, मुंगेली, बेमेतरा, सूरजपुर, गरियाबंद, सुकमा, बलरामपुर, कोंडागॉव, नारायणपुर, बीजापुर, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई है, जो छत्तीसगढ़ के अंतर्गत आते है।

प्रस्तुत अध्ययन रायपुर शहर के सरकारी और गैरसरकारी विद्यालय संस्थानों के शहरी क्षेत्र में कार्यरत कामकाजी महिलाओं को लिया गया है, जो शिक्षिकाएं है। रायपुर शहर में सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों में शिक्षिकाओं का अध्ययन किया गया है, जिसमें हम शोध अध्ययन के लिए 300 महिलाओं को150 सरकारी एवं 150 गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं को लिया गया है।

उत्तरदाताओं का चुनाव - प्रस्तुत अध्ययन रायपुर शहर के सरकारी और गैरसरकारी विद्यालय संस्थानों के शहरी क्षेत्र में कार्यरत कामकाजी महिलाओं को लिया गया है, जो शिक्षिकाएं है। रायपुर शहर में सरकारी विद्यालयों में शिक्षिकाओं की संख्या 80 हैए जिसमें 50 शिक्षिकाओं का अध्ययन किया गया है एवं गैरसरकारी विद्यालयों में कुछ शिक्षिकाओं की संख्या 100 हैए जिसमें 50 शिक्षिकाओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें हम शोध अध्ययन के लिए 100 महिलाओं को50 सरकारी एवं 50 गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें देव निर्दशन विधि द्वारा चुना गया है।

तालिका

क्र.	गैरसरकारी स्कूल	न्यादर्श
1	पवन पुत्र विद्या मंदिर, जोरा, रायपुर (छ.ग.)	25
2	आदर्श सरस्वती उ. मा. विद्या मंदिर, कासीराम नगर, रायपुर (छ.ग.)	20
3	श्वेता विद्या मंदिर, न्यू राजेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.)	20
4	भारतीय विद्या मंदिर, महावीर नगर, रायपुर (छ.ग.)	19
5	संत श्री आशराम गुरूकुल स्कूल, वी.आई.पी. रोड, रायपुर (छ.ग.)	18

6	संस्कार भारतीय उ. मा. विद्यालय, बूढ़ापारा, रायपुर (छ.ग.)	18
7	श्री विनय विद्या मंदिर, पचपेड़ी नाका, रायपुर (छ.ग.)	15
8	शिशु शिक्षा केन्द्र, बूढ़ापारा, रायपुर (छ.ग.)	15
	योग	150

क्र.	सरकारी स्कूल	न्यादर्श
1	ज. रा. दानी कन्या शाला, बूढ़ापारा, रायपुर (छ.ग.)	43
2	शासकीय उ. मा. शाला, कृषक नगर जोरा, रायपुर (छ.ग.)	41
3	शासकीय उ. मा. शाला, लालपुर, रायपुर (छ.ग.)	36
4	शहीद संजय यादव उ. मा. शाला, संजय नगर, रायपुर (छ.ग.)	30
	योग	150

स. तथ्यों का संकलन की प्रविधि एवं उपकरण - प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक व द्वितीयक समंकों पर आधारित है। प्राथमिक समंकों का संकलन प्रश्नावली व साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से किया गया है तथा द्वितीयक समंकों पर उत्तरदाताओं का अवलोकन के माध्यम से साक्षात्कार पूर्ण किया गया है।

द. तथ्यों का प्रस्तुतीकरण - प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के समुचित संकलन हेतु एवं अध्ययन की वस्तुनिष्ठता के लिए साक्षात्कार अनुसूची उपकरण की सहायता से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया है। इस अध्ययन हेतु साक्षातकार निर्देशिका का भी प्रयोग किया गया है। जिससे भी अध्ययन से संबंधित वस्तुनिष्ठ तथ्यों का संकलन किया गया है। इसके अतिरिक्त उत्तरदाताओं की दशा एवं उपलब्ध सुविधाओं हेतु अवलोकन प्रविधि के द्वारा भी तथ्य संकलन किया गया है। अध्ययन के द्वितीयक तथ्यों के संकलन हेतु विभिन्न शोध अध्ययनों, शोध आलेख, पत्र-पत्रिकाओं तथा शासन के द्वारा प्रसारित विभिन्न सूचनाओं का संकलन किया गया है। जिससे अध्ययन को पूर्णतः प्रभावित एवं सारगर्भित बनाया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

- कामकाजी महिलाओं में नौकरी के प्रति संतुष्टि की स्थिति का अध्ययन करना।
- कामकाजी महिलाओं को विद्यालयों में अन्य सुविधाएं मिलने की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कामकाजी महिलाओं का अपने कार्य और परिवार को संतुलित करने की स्थिति का अध्ययन करना।
- कामकाजी महिलाओं की व्यक्तिगत आकांक्षाओं की स्थिति का अध्ययन करना।

इस निर्देशन का चुनाव कम खर्चीला होने के साथ-साथ उत्तरदाताओं की सुविधा और उपलब्धि को ध्यान में रखकर किया गया है। इस प्रपत्र को पूर्ण करने हेतु तथ्यों के संकलन में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा तथ्यों का संकलन अत्यंत जटिल के साथ-साथ कष्टकारी भी रहा। इस अध्ययन के अंतर्गत चयनित शिक्षिकाओं की आर्थिक, सामाजिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि का तथ्य परक विवरण प्रस्तुत किया गया है। कार्यरत शिक्षिकाओं के संबंध में साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उनका अवलोकन किया गया है।

तालिका 01

उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत आकांक्षाओं की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत आकांक्षाओं की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1	वित्तीय स्वतंत्रता	60	40	40	26
2	समान अवसर	40	26	50	34
3	शिक्षा में उन्नति	20	14	30	20
4	नेतृत्व भूमिका	30	20	30	20
	योग	150	100	150	100

सारिणी क्रमाक 01

उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत आकांक्षाओं की स्थिति

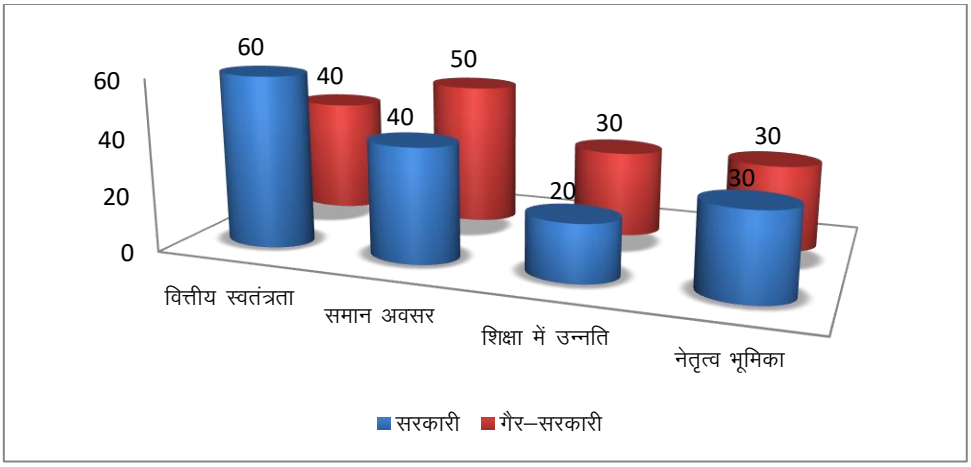

उपर्युक्त तालिका क्रमाक 01 में अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में व्यक्तिगत आकांक्षाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 40 प्रतिशत महिलाएं वित्तीय स्वतंत्रता चाहती है, तो

गैर-सरकारी शिक्षिकाओं में से 26 प्रतिशत वित्तीय स्वतंत्रता चाहती है, सरकारी शिक्षिकाओं में से 26 प्रतिशत महिलाएं समान अवसर चाहती है, तो गैर-सरकारी में 34 प्रतिशत, सरकारी शिक्षिकाओं में से 14 प्रतिशत महिलाएं शिक्षा में उन्नति लाना चाहती है तो गैर-सरकारी में 20 प्रतिशत चाहती है तथा 20 प्रतिशत सरकारी शिक्षिकाओं में से नेतृत्व भूमिका को अच्छे से निभाना चाहती है, तो गैर-सरकारी में 20 प्रतिशत चाहती है।

तालिका 02

उत्तरदाताओं का नौकरी के प्रति संतुष्टि की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं का नौकरी के प्रति संतुष्टि की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1- 2- -	हां नहीं	90 60	60 40	80 70	54 46
	योग	150	100	150	100

सारिणी क्रमाक 02

उत्तरदाताओं का नौकरी के प्रति संतुष्टि की स्थिति

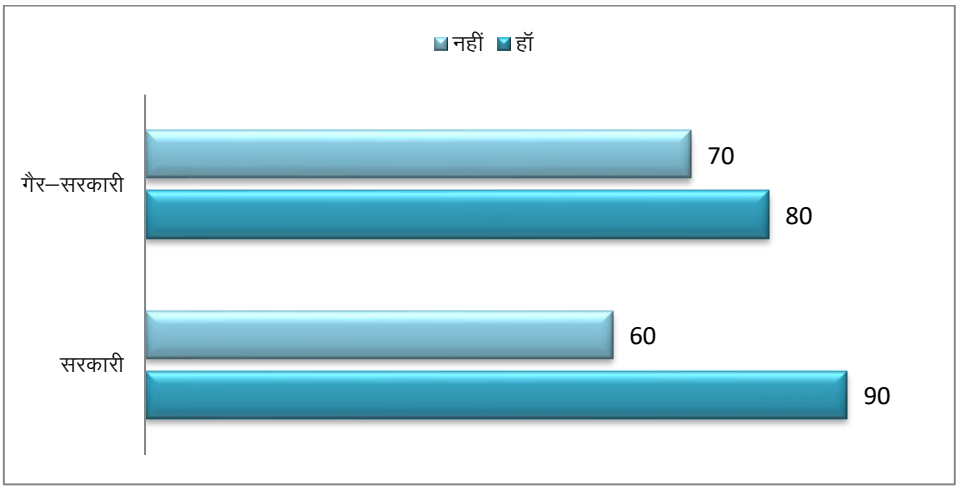

तालिका क्रमाक 02 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से 60 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट है तथा 40 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट नहीं है। गैर-सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से 54 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट है तथा 46 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट नहीं है।

तालिका क्रमाक 03

उत्तरदाताओं को विद्यालय में किसी प्रकार की अन्य सुविधाएं मिलने की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं को विद्यालय में किसी प्रकार की अन्य सुविधाएं मिलने की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1	महंगाई भत्ता	50	34	00	0
2	परिवहन भत्ता	30	20	20	14
3	पीएफ	40	26	70	46
4	ग्रैच्युटी	10	06	20	14
5	मेडिकल लाभ	20	14	40	26
	योग	150	100	150	100

सारिणी क्रमाक 03

उत्तरदाताओं को विद्यालय में किसी प्रकार की अन्य सुविधाएं मिलने की स्थिति

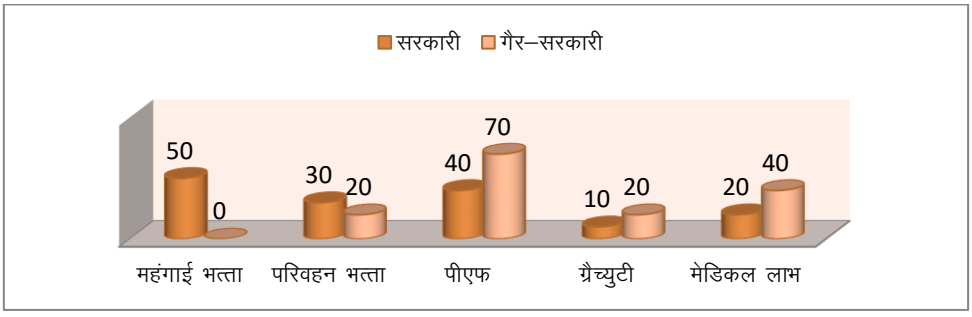

उपर्युक्त तालिका क्रमाक 03 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्रस्तुत अध्ययन में सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं को विद्यालयों से सुविधाएं की बात हो रही है जिससे ज्ञात होता है कि 34 प्रतिशत महिलाओं को महंगाई भत्ता, 20 प्रतिशत महिलाओं को परिवहन भत्ता, 26 प्रतिशत महिलाओं को पीएफ, 6 प्रतिशत महिलाओं को ग्रैच्युटी तथा 14 प्रतिशत महिलाओं को मेडिकल लाभ की सुविधाएं विद्यालयों से मिलती है। गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं को विद्यालयों से सुविधाएं की बात हो रही है जिससे ज्ञात होता है कि 14 प्रतिशत महिलाओं को परिवहन भत्ता, 46 प्रतिशत महिलाओं को पीएफ, 14 प्रतिशत महिलाओं को ग्रैच्युटी तथा 26 प्रतिशत महिलाओं को मेडिकल लाभ की सुविधाएं विद्यालयों से मिलती है।

तालिका 04

उत्तरदाताओं का दोहरे दायित्व के कारण शारीरिक समस्यों की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं का दोहरे दायित्व के कारण शारीरिक समस्यों की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1	सिर दर्द	50	34	40	27
2	ऑखों की समस्याएं	30	20	50	34
3	पेट में गैस का बनना	20	13	20	13
4	पाचनशीलता में कमी	20	13	10	06
5	आनिन्द्रा	30	20	30	20
	योग	150	100	150	100

सारिणी क्रमाक 04

उत्तरदाताओं का दोहरे दायित्व के कारण शारीरिक समस्यों की स्थिति

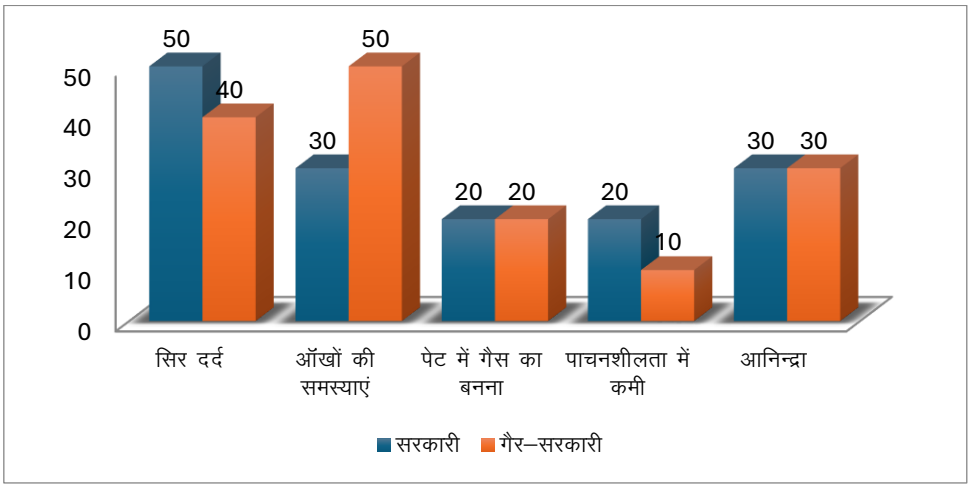

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सरकारी और गैरसरकारी शिक्षिकाओं में दोहरे दायित्व के कारण शारीरिक समस्या हो जाती है जिसमें सिर दर्द से सरकारी शिक्षिकाओं का 50 प्रतिशत है तो गैरसरकारी का 40 प्रतिशत है, आंखों की समस्याओं से परेशान सरकारी शिक्षिकाओं में 30 प्रतिशत है तो गैरसरकारी से 50 प्रतिशत है, पेट में गैस का बनने की समस्याओं से 20 प्रतिशत सरकारी और गैरसरकारी दोनों ही महिलाएं समस्या ग्रस्त है, वहीं पाचनशीलता में कमी

से सरकारी शिक्षिकाओं का 20 प्रतिशत है तो गैर-सरकारी शिक्षिकाओं का 10 प्रतिशत है, आनिन्द्रा से ग्रस्त सरकारी और गैर-सरकारी का 30 प्रतिशत है।

तालिका 05

उत्तरदाताओं की संवेगात्मक संबंधी समस्याओं की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं की संवेगात्मक संबंधी समस्याओं की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1	घबराहट	50	34	60	40
2	चुप रहना	20	13	30	20
3	रोना	10	06	20	13
4	परेशान होना	30	20	10	06
5	अन्य समस्या	40	27	30	20
	योग	150	100	150	100

सारिणी क्रमाक 05

उत्तरदाताओं की संवेगात्मक संबंधी समस्याओं की स्थिति

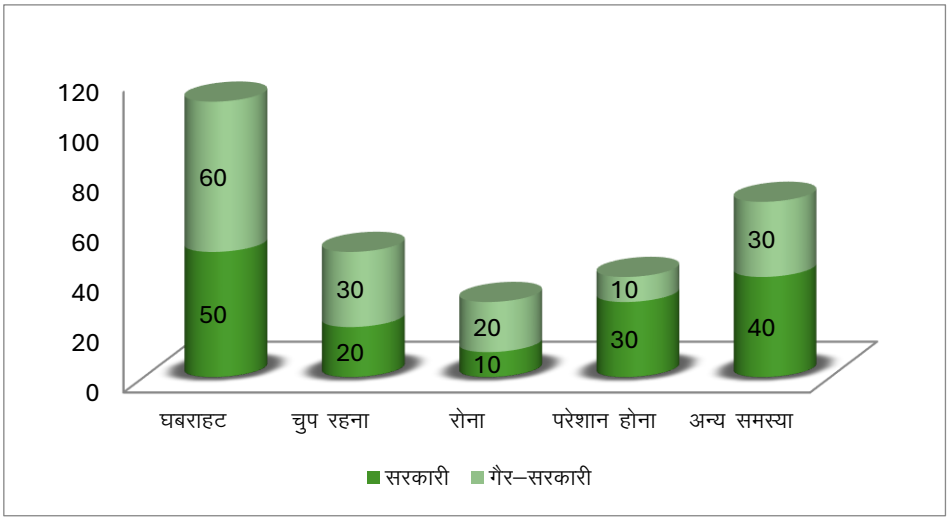

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं में संवेगात्मक संबंधी समस्याएं भी होती है जिसमें घबराहट की स्थिति सरकारी शिक्षिकाओं का 50 प्रतिशत एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं का 60

प्रतिशत है, महिलाओं में काम के प्रति चुप रहने की स्थिति में सरकारी शिक्षिकाओं का 20 प्रतिशत और गैर-सरकारी का 30 प्रतिशत है, रोने की स्थिति में सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का 10 प्रतिशत तो गैर-सरकारी का 20 प्रतिशत है, काम के प्रति परेशानियों की स्थिति का सरकारी शिक्षिकाओं का 30 प्रतिशत तो गैर-सरकारी का 10 प्रतिशत है तथा महिलाओं की अन्य समस्याओं में सरकारी शिक्षिकाओं का 40 प्रतिशत है तो गैर-सरकारी का 30 प्रतिशत है।

निष्कर्ष

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से 60 प्रतिशत शिक्षिकाएं अपने परिवार और कार्य को संतुलित कर सकती है। लेकिन 40 प्रतिशत शिक्षिकाएं अपने कार्य और परिवार को संतुलित नहीं कर पाती है क्योंकि उनके पास समय नहीं होता है कि वे सब को संतुलित कर सके। गैरसरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से 50 प्रतिशत शिक्षिकाएं अपने परिवार और कार्य को संतुलित कर सकती है। इसकी बड़ी वजह इस लिए भी है कि अधिकतर महिलाएं संयुक्त परिवारों में रहती है जहां परिवार के अन्य सदस्य भी रहते है जिसमें कामकाजी महिलाओं की मदद कर देते है याने संयुक्त परिवार में अन्य महिलाएं भी है जो बाहर काम में नहीं जाती है वे ही घर को अच्छे से देख लेती है और कामकाजी महिलाओं को अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ती है। लेकिन 50 प्रतिशत शिक्षिकाएं अपने कार्य और परिवार को संतुलित नहीं कर पाती है क्योंकि उनके पास समय नहीं होता है कि वे सब को संतुलित कर सके। एकल परिवार से है या वे अकेली रहती है जिससे वे दोनों कार्यो को उतना संभाल नहीं पाती है।

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से 70 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट है तथा 30 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट नहीं है। गैरसरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से 40 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट है तथा 60 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट नहीं है।

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से 70 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट है तथा 30 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट नहीं है। गैरसरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से 40 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट है तथा 60 प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यो से संतुष्ट नहीं है।

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में व्यक्तिगत आकांक्षाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 40 प्रतिशत महिलाएं वित्तीय स्वतंत्रता चाहती है, तो गैरसरकारी शिक्षिकाओं में से 30 प्रतिशत वित्तीय स्वतंत्रता चाहती है, सरकारी शिक्षिकाओं में से 20 प्रतिशत महिलाएं समान अवसर चाहती है, तो गैरसरकारी में 10 प्रतिशत, सरकारी शिक्षिकाओं में से 30 प्रतिशत महिलाएं शिक्षा में उन्नति लाना चाहती है तो गैरसरकारी में 40 प्रतिशत चाहती है तथा 10 प्रतिशत सरकारी शिक्षिकाओं में से नेतृत्व भूमिका को अच्छे से निभाना चाहती है, तो गैर-सरकारी में 20 प्रतिशत चाहती है।

प्रस्तुत अध्ययन में सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं को विद्यालयों से सुविधाएं की बात हो रही है जिससे ज्ञात होता है कि 30 प्रतिशत महिलाओं को महंगाई भत्ता, 10 प्रतिशत महिलाओं को परिवहन भत्ता, 30 प्रतिशत महिलाओं को पीएफ, 10 प्रतिशत महिलाओं को ग्रैच्युटी तथा 20 प्रतिशत महिलाओं को मेडिकल लाभ की सुविधाएं विद्यालयों से मिलती है। गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं को विद्यालयों से सुविधाएं की बात हो रही है जिससे ज्ञात होता है कि 10 प्रतिशत महिलाओं को परिवहन भत्ता, 50 प्रतिशत महिलाओं को पीएफ, 20 प्रतिशत महिलाओं को ग्रैच्युटी तथा 20 प्रतिशत महिलाओं को मेडिकल लाभ की सुविधाएं विद्यालयों से मिलती है।

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरकारी और गैर-सरकारी शिक्षिकाओं में दोहरे दायित्व के कारण शारीरिक समस्या हो जाती है जिसमें सिर दर्द से सरकारी शिक्षिकाओं का 50 प्रतिशत है तो गैर-सरकारी का 40 प्रतिशत है, ऑखों की समस्याओं से परेशान सरकारी शिक्षिकाओं में 30 प्रतिशत है तो गैर-सरकारी से 50 प्रतिशत है, पेट में गैस का बनने की समस्याओं से 20 प्रतिशत सरकारी और गैर-सरकारी दोनों ही महिलाएं समस्या ग्रस्त है, वहीं पाचनशीलता में कमी से सरकारी शिक्षिकाओं का 20 प्रतिशत है तो गैर-सरकारी शिक्षिकाओं का 10 प्रतिशत है, आनिन्द्रा से ग्रस्त सरकारी और गैर-सरकारी का 30 प्रतिशत है।

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं में संवेगात्मक संबंधी समस्याएं भी होती है जिसमें घबराहट की स्थिति सरकारी शिक्षिकाओं का 50 प्रतिशत एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं का 60 प्रतिशत है, महिलाओं में काम के प्रति चुप रहने की स्थिति में सरकारी शिक्षिकाओं का 20 प्रतिशत और गैर-सरकारी का 30 प्रतिशत है, रोने की स्थिति में सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का 10 प्रतिशत तो गैर-सरकारी का 20 प्रतिशत है, काम के प्रति परेशानियों की स्थिति का सरकारी शिक्षिकाओं का 30 प्रतिशत तो गैर-सरकारी का 10 प्रतिशत है तथा महिलाओं की अन्य समस्याओं में सरकारी शिक्षिकाओं का 40 प्रतिशत है तो गैर-सरकारी का 30 प्रतिशत है।

सुझाव

- शैक्षणिक संस्थान के प्रमुख द्वारा शिक्षिकाओं की अध्यापन संबंधी सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- शैक्षणिक संस्थाओं में कार्य करने वाली शिक्षिकाओं को अध्यापन कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्य नहीं दिया जाना चाहिए।
- शैक्षणिक संस्थाओं में कार्य करने वाली शिक्षिकाओं को भी उनकी योग्यता और उनके अनुभव के आधार पर पदोन्नति देनी चाहिए।
- सरकारी एवं गैरसरकारी शैक्षणिक संस्थान में कार्य करने वाली शिक्षिकाओं को वेतनमान में पाये जाने वाली असमानता को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में कार्यरत महिलाओं एवं पुरूषों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- दोहरे दायित्व की कसौटियों पर खरी उतरने के लिए कामकाजी महिलाओं को योजनाबद्ध तरीके से काम करना चाहिए।
- पारिवारिक सदस्यों के द्वारा महिलाओं को भावनात्मक, मानसिक एवं शारीरिक तौर पर सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
- कामकाजी महिलाओं को घर के कामों के लिए परिवार के सदस्यों की मदद लेनी चाहिए।
- कामकाजी महिलाओं को दैनिक जीवन में योग, व्यायाम, ध्यान लगाना तथा संगीत चिकित्सा की भी सहायता लेनी चाहिए।
- पारिवारिक सदस्यों के द्वारा महिलाओं को भावात्मक, मानसिक एवं शारीरिक तौर पर सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अंसारी एम.एम., राष्ट्रीय महिला आयोग और नारी, ज्योति प्रकाशन, 2000, पेज नं. 122
2. गोस्वामी एस., महिला एवं बाल विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर-302 003, 2003, पेज नं. 33-36
3. शुक्ला सी. एस., भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, प्रभात प्रकाशन, 2004, पेज नं. 55-60
4. मंगल एस. के., एसेन्शियल ऑफ एजुकेशन साइकोलॉजी, प्रिंटिंग हॉल ऑफ इंडिया प्र. लि. नई दिल्ली, 2007
5. अहमद शकील, कामकाजी महिलाओं का कार्य जीवन में संघर्ष, एमराल्ड ग्रुप पब्लिशिंग लिमिटेड, 2011, 12, पृष्ठ सं. 289-302
6. त्रिपाठी आर., कामकाजी महिलाएं वास्तविक स्थिति, खुशी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली- 110022, 2011, पेज नं. 123-130
7. टी.एस.शांती, सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग में महिला कर्मचारियों के कार्य जीवन संतुलन पर एक अध्ययन,
8. व्यापार अर्थशास्त्र और प्रबंधन अनुसंधान के जेनिथ इंटरनेशनल जर्नल, 2012, 82-96